

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

रिऒुर् नडादूर् श्री श्रीनिधेः कृतिषु
॥ श्रीहयग्रीरस्रङ्गरा ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीहयग्रीरस्रक्वरा ॥

करिताजितकल्लोलिकन्यकान्तुरक्वसे ।

करुणादिगुणाद्याय कमलानिधये नमः ॥

अग्रे पश्यामि तेजः किमपि हयमुखं रर्धकं रारिराशेः
रिदयारूपस्य हृदयं रिशदशशिनिभं पद्मजाताभिनन्द्यम् ।
शङ्खं चक्रं च पुस्तं रिबृतिरतिमतीं ज्ञानमुद्रां च लम्ब्रीं
विभ्रद् रिद्राजमानं श्रुतिततिमहितं लोचनानेकदृश्यम् ॥ 1 ॥

अग्रे पश्यामि नित्यं हयरदनमहं धाम मान्यं परित्रं
शीतं रिद्योतमानं मधुरमतितमां मङ्गलं दर्शनीयम् ।
दुष्काञ्चोद्धेरुदीतां कमलरनसथीं लालयद्दामभागे
लम्ब्रीमक्के निरिष्टां शशिनमधिरसद् दिर्यभर्यानुभारम् ॥ 2 ॥

अग्रे पश्यामि भूयः धरलतममहं धाम सर्वोत्तमं तं
लम्ब्या रामाक्कभजा मृदुलनिजडुजाम्निष्टपृष्ठं ररिष्ठम् ।
राजीन्द्रास्यं स्वहेषारिधुतनतजनानन्तनानारिधाघं
मानातीतानुभारं मुनिजनमनसां लम्ब्यमेकं परित्रम् ॥ 3 ॥

अग्रे पश्यामि भान्तं धरलमतितरां राजिरक्त्रं पुराणं
येन प्रेष्ठेन कामं जित इह महसा शीतशुद्धेन सोहयम् ।
नित्यं धत्ते निषण्णं निजसुभगतनौ दुष्कपाथोधिजातः
चन्द्रोहयं देरदेरं रिधिरिहिततपोजातसङ्गातमूर्तिम् ॥ 4 ॥

अग्रे पश्यामि नाथं मतिकृतिरिहतं रामभागाक्कभजा
रिदयामूर्त्या श्रिया यः करकमलजुषा दिर्यसौरभ्यभजा ।

লীলাপদ্মেন সংরীজিতনিজরদনঃ শ্রান্তিহীনো নিতান্তং
নিত্যং রেদাংস্তদর্থানপি কিল কথযন্ তং পুমাংসং হযাস্যম্ ॥ 5 ॥

দৃগ্ভ্যাং পদ্বাকৃতিভ্যাং দিনকররজনীকান্ততুল্যাকৃতিভ্যাং
চক্রশ্রীশঙ্খরাভ্যাং রিরচিতনিমিষোন্মেষলীলাভরাভ্যাম্।
আভ্যাং দেৱাদিদেৱো হযররদনো মানুষাকারদেহঃ
সংসারেহস্মিন্ চরন্তং হযমির সরযং মানুষং মাং স পাতু ॥ 6 ॥

আস্তামস্মৎপুরস্তাদনঘশুভগুণো দেৱদেৱো হযাস্যঃ
হেযারিক্ষিপ্ততত্ত্বিন্নিতকলকলো দিৱ্যসৌন্দর্যভূমিঃ।
হংৱা সদ্যস্সুদুষ্টং মধুমসুররং রেধসঃ কৰ্ণজাতে
রর্ষন্ হর্ষণে রস্যাঃ মধুমযফণিতীঃ রেদরেদাঙ্গসক্তাঃ ॥ 7 ॥

অক্লে কৃৎৱা কৃশাঙ্গীং হিমকরনিলযশ্শঙ্খকুপ্তাভিষেকাং
শীতৈস্সংরেপমানাং ইতরকরগতং দর্শযন্ চক্ররাজম্।
আশ্রাস্যাস্মিষ্য হেযামযমধুররৈর্দেৱদেৱো হযাস্যঃ
নিত্যং মচ্চিত্তরঙ্গে কলযতু নটনং মোদবোধস্বরূপঃ ॥ 8 ॥

রেগাং প্রতুহীনং জনযিতুমির নস্সন্নতানাং মুখেভ্যঃ
রাচামুচৈঃ প্রৱাহং রিহিতহিতমহারাজিরক্রারতারঃ।
শ্রীমান্ রাগীশ্ররোহযং ধরলশুভতনুশ্শুঙ্কসত্ত্বস্বরূপঃ
সংৱং নস্সংরিধতাং প্রকটিতকরণো নীরজো নিস্তমস্কম্ ॥ 9 ॥

মন্দোহপ্যানন্দপাথোনিধিকুহরগতান্
কর্তুমীষ্টে বুধেন্দ্রান্
রাচামুচৈর্ৱিলাসৈর্নররসভরিতৈ -
শ্রীহযাস্যো যদি স্যাৎ।
কিঞ্চিচ্চিতে নিরিষ্টো রিমলনিজতনু -
শ্শঙ্খচক্রে সপুস্তাং

